डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, अगस्त(जुलाई–अगस्त संयुक्तांक)2021

वर्षः 04, अंकः 09–10

नई शिक्षा नीति हमें भारतीयता की ओर ले जाती हैः प्रो0 वाजपेयी 03

महिलाओं की उन्नति से ही देश के विकास का निर्धारण होता हैः कुलपति 04

उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह का प्रथम वर्ष

31 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह का प्रथम वर्ष उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा है। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के भू–भौतिकी विज्ञान के प्रो0 रविशंकर सिंह ने 31 जुलाई, 2020 को विश्वविद्यालय के 20वें कुलपति का कार्यभार ग्रहण किया। कोविड–19 महामारी एवं अन्य चुनौतियों के बीच कार्य करते हुए कुलपति ने मात्र वर्ष भर में ही विश्वविद्यालय में सफलता के कई मापदण्ड स्थापित किए। उन्होंने परिसर में शैक्षिक माहौल बनाने के साथ शोध को भी बढ़ावा दिया। परिसर में इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज की स्थापना कुलपति प्रो0 सिंह की पहली प्राथमिकता रही। इनके कुशल निर्देशन में परिसर में डी0 फार्मा एवं बी0फार्मा कोर्स संचालित किए जाने की सारी औपचारिकताओं को पूर्ण करते हुए सत्र 2021–22 के लिए प्रवेश की ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू कर दी गई। इसके अतिरिक्त नई शिक्षा नीति के तहत विश्वविद्यालय के संघटक राजकीय महाविद्यालयों में बी0ए0 कोर्स चलाने की योजना बनी।

प्रदेश की राज्यपाल एवं कुलाधिपति के दिशा–निर्देशन में कोविड–19 के संक्रमण से बचाव के लिए विश्वविद्यालय द्वारा जनपद के 16 चयनित गावों में वृहद कोविड टीकाकरण जागरूकता अभियान चलाया गया। कुलपति प्रो0 सिंह के नेतृत्व में शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं ने 11 अप्रैल से 14 अप्रैल, 2021 तक घर–घर जाकर लोगों को टीकाकरण के लिए प्रेरित किया। कुलपति प्रो0 सिंह के दिशा–निर्देशन में परिसर के महिला अध्ययन केन्द्र एवं एक्टिविटी क्लब द्वारा ग्राम पंचायत माधवपुर, मसौधा में महिला विस्तार गतिविधि के तहत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कराया जा रहा है। इसमें महिलाओं को उनके स्वास्थ्य एवं महिलाओं से सम्बन्धित सरकारी योजनाओं से परिचित कराया गया। कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने वर्षों से विश्वविद्यालय में लम्बित नैक मूल्यांकन को पूर्ण कराया जिसके परिणाम स्वरूप विश्वविद्यालय को नैक रैंकिंग में बी–ग्रेड प्राप्त हुआ।

कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने परिसर में गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के साथ स्ववित्तपोषित योजना के अंतर्गत सत्र 2020–21 से परिसर में कई नए रोजगार पाठ्यक्रमों का संचालन एवं शोधपीठ की स्थापना की। इसी क्रम में सेंटर फॉर पॉपुलेशन, कम्युनिटी हेल्थ एंड डेवलपमेंट, सरदार पटेल सेंटर फॉर नेशनल इंटीग्रेशन शोध–पीठों की स्थापना की गयी। कुलपति ने कोविड–19 महामारी के संकट में भी छात्र–छात्राओं को रोजगार उप–लब्ध कराने के लिए प्लेसमेंट सेल द्वारा ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कार्यशालाएं आयोजित कराई एवं उन्हें रोजगार का अवसर भी प्रदान किया। परिसर में भारतीय सेना में अधिकारी के रूप में भर्ती के लिए सेना के अधिकारियों द्वारा छात्र–छात्राओं की काउंसलिंग भी कराई गई है।

कुलपति प्रो0 सिंह के दिशा–निर्देशन में परिसर के छात्र–छात्राओं ने अखिल भारतीय स्तर की प्रत्येक प्रतियोगी परीक्षाओं सहित नेट एवं जेआरएफ परीक्षाओं में नियमित रूप से उल्ले–खनीय सफलताएं प्राप्त की हैं। कुलपति प्रो0 सिंह के नेतृत्व में प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत अभियान के तहत संपूर्ण परिसर में स्वैच्छिक श्रमदान एवं साफ–सफाई का कार्यक्रम भी अक्टूबर माह से निरन्तर प्रत्येक शनिवार को चलाया गया जिसमें विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी तथा कर्मचारियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। परिसर में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न पक्षों से परिचित कराने के लिए शिक्षकों एवं छात्र–छात्राओं के बीच जागरूकता अभियान चलाया गया। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मिशन–शक्ति अभियान के तहत महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा एवं सम्मान में शारदीय नवरात्र से परिसर के वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा विशेषज्ञों के व्याख्यानों से निरन्तर महिलाओं, बालिकाओं एवं अभिभावकों को जागरूक किया गया।

परिसर में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के कुशल मार्ग–दर्शन में पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराने एवं प्रशिक्षण के उद्देश्य से नगर निगम, अयोध्या के सहयोग से टूरिस्ट गाइड का प्रशिक्षण–कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। इसके अतिरिक्त हेरिटेज वॉक व कई राष्ट्रीय शोध–संस्थाओं के साथ एमओयू किया गया। विश्वविद्यालय के सभी विभागों द्वारा छात्र–छात्राओं के बौद्धिक विकास के लिए कई राष्ट्रीय सेमिनारों, वेबि–नारों एवं कार्यशालाओं का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। कुलपति प्रो0 सिंह के सद्प्रयासों से छात्र–छात्राओं एवं सामान्य नागरिकों को विश्वविद्यालय की सूचनाएं आसानी से मिल सके, इसके लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट को कई छात्रोपयोगी फीचर्स के साथ अपग्रेड किया गया है। हेल्प लाइन नम्बर भी जारी किया है ताकि सूचनाओं को प्राप्त करने में विद्यार्थियों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने प्रदेश सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुपालन में ऑनलाइन शिक्षा से संबंधित ई–कंटेंट तैयार किए जाने के लिए परिसर एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों को विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षित कराया। परिसर के सत्र को नियमित बनाये रखने के लिए संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों एवं अधिकारियों के साथ लगातार बैठकें की गयी जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय द्वारा सत्र 2020–21 के प्रवेश एवं मुख्य परीक्षा के परिणाम शीघ्र ही घोषित कर दिए गए। इसके अतिरिक्त कुलपति ने परिसर के निर्माण–कार्यों में पारदर्शिता लाने के लिए 'निर्माण एवं आन्तरिक प्रकोष्ठ' का गठन एवं महिलाओं एवं छात्रों के हितों की सुरक्षा एवं सम्मान की भागीदारी सुनिश्चित कराने के लिए विश्वविद्यालय में 'महिला शिकायत एवं कल्याण प्रकोष्ठ' का गठन किया है।

कुलपति प्रो0 सिंह ने विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्रों को विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के सर्टिफिकेट को ऑनलाइन उपलब्ध कराया। इस सर्टिफिकेट में डिजिटल सिग्नेचर से युक्त फोटो सहित राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों का विवरण भी उपलब्ध है। पहले यह प्रमाण–पत्र ऑफलाइन जारी किया जाता रहा है। विश्वविद्यालय ने अयोध्या की पौराणिक, सांस्कृ–तिक एवं धार्मिक विरासतों को संजोने एवं उसे नयी ऊंचाइयों तक पहुंचाने में अपना सर्वोत्कृष्ट योगदान प्रदान किया है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय ने अयोध्या के दिव्य दीपोत्सव कार्यक्रम में सात हजार स्वयंसेवकों, छात्रों तथा शिक्षकों के साथ अयोध्या के पुण्यदायी घाटों पर एक बार में 6 लाख 6 हजार 569 दीप जला कर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में चौथी बार नाम दर्ज कराया है। इसके साथ ही राज्यस्तरीय अयोध्या हॉफ मैराथन एवं अन्तर्विभागीय खेल–कूद प्रतियोगिता का कोविड–19 के प्रोटोकाल के अनुपालन में सफलतापूर्वक आयोजन भी कराया गया।

कुलपति प्रो0 सिंह ने अपने एक वर्ष के कार्यकाल में परिसर में कक्षा–संचालन, शोध, सेमिनार, संगोष्ठी सहित अकादमिक गतिविधियों का संचालन सुचारू रूप से सम्पन्न कराया है। प्रो0 सिंह ने परिसर के सत्र को नियमित बनाये रखने के लिए संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों एवं अधिकारियों के साथ प्रवेश एवं परीक्षा सम्बन्धी कई बैठकें की हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के प्रशासनिक निर्णय, बैठकें एवं अन्य गतिविधियां सफलतापूर्वक सम्पन्न करायी गयी हैं। कुलपति प्रो0 सिंह परिसर में शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के उन्नयन के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

वर्तमान में संक्रमण से बचाव करने में सक्षम है योग : प्रो0 मिश्र

21 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में कोविड–19 के संदर्भ में 'योगिक जीवन व समग्र स्वास्थ्य' विषय पर दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेस का आयोजन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेस के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए योग जरूरी है। योग एक समग्र दृष्टि है इससे व्यक्ति अपनी काया को निरोगी बना सकता है। कुलपति ने कहा कि शास्त्रों में भी योग के महत्व को बताया गया है। यदि हम नियमित योग करें तो मन, बुद्धि एवं चित सभी मिलकर मन को शांति प्रदान करेंगे। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि योग भारत के लिए नया नहीं है। यह सदियों से हमारे ऋषि मुनियों द्वारा उपलब्ध कराई गई धरोहर है जिसे आज अन्त–र्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में सम्मान मिला है। कुलपति ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री एवं सभी के सामूहिक प्रयासों से आज योग दिवस मनाने का अवसर मिल रहा है। आज का दिन भारतवासियों के लिए बड़े गर्व एवं उल्लास का दिन है।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति प्रो0 कपिलदेव मिश्र ने कहा कि वर्तमान समय में योग संक्रमण से बचाव करने में सक्षम है। इसके नियमित अभ्यास से संक्रमण से बचा जा सकता हैं। उन्होंने कहा कि आज भारत सहित 190 देश अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस मना रहे हैं। योग न केवल सनातन काल की धरोहर है बल्कि विज्ञान सम्मत भी है। शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा इन चारों का समुच्चय ही मानव है। मानव का शरीर उपभोगवादी है, अच्छा से अच्छा खाना चाहता है। यही पशु और मानव में अन्तर करता है। उन्होंने बताया कि पशुओं को योग करने की जरूरत नहीं होती है। वे स्वस्थ एवं मस्त रहते हैं। प्रो0 मिश्र ने कहा कि योग सनातन काल से सृष्टि के प्रारम्भ से है। यही कारण है कि चितवृत्तियों का निरोग ही योग है। श्रीमद्भगवत गीता में उल्लेख है कि कर्म की कुशलता ही योग है। जो योग में निपुण, दक्ष एवं सीख रहे हैं, वे व्याधि से समाधि तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य के शरीर में वात, पित्त एवं कफ इन्ही तीनों के संतुलन से मनुष्य पूर्ण रूप से स्वस्थ रहता है और इन्हे संतुलित करने का माध्यम योग है।

शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योग संस्थान के निदेशक प्रो0 एस0एस0 मिश्र ने अतिथियों का स्वागत करते हुए दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेस की रूप–रेखा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए योगाभ्यास करना आवश्यक है। इससे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है।

तकनीकी सत्र को संबोधित करते हुए पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के प्रो0 राजीव चौधरी ने बताया कि कई शोधों में यह सिद्ध हो चुका है कि योग में हम आसन, प्राणायाम तथा ध्यान के समग्र अभ्यास से हम अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को आसानी से बढ़ा सकते हैं।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के प्रो0 सुनील कुमार गौतम ने कहा कि अष्टांग योग के यम, नियम और हठयोग के शोधन और बंधों द्वारा तथा सही जीवन शैली को अपनाकर उत्तम स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि आहार और विहार की सम्यकता ही योग के अनुसार समग्र स्वास्थ्य का आधार है। अन्य वक्ता में हॉलैण्ड के महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय के डॉ0 एलन ओल्सगार्ड ने भी संबोधित किया।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए विवेक सृष्टि संस्थान अयोध्या के निदेशक डॉ0 चैतन्य ने कहा कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का पूर्ण सजगता से चिंतन एवं इनके अर्जन के लिए प्रयास करना मनुष्य के जीवन का एक मात्र लक्ष्य है। भारत के ग्रंथों में नियमित स्वाध्याय का निर्देश दिया गया है। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के संक्रमण से लड़ने के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता के संवर्धन के लिए संतुलित, सात्विक व पोषण युक्त आहार लेना चाहिए। इन सबके अलावा योगाभ्यास ही समग्र स्वास्थ्य का निदान है। डॉ0 चैतन्य ने कोविड महामारी व लॉकडाउन के कारण लोगों में उत्पन्न मानसिक अवसाद से उबारने के लिए प्रार्थना चिकित्सा पद्धति को अत्यंत प्रभावशाली बताया।

कार्यक्रम का संचालन संस्थान के आलोक तिवारी एवं अनुराग सोनी ने किया। तकनीकी सहयोग मनीषा यादव एवं संघर्ष सिंह ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 रमापति मिश्र, डॉ0 अनिल कुमार मिश्र, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 मुकेश वर्मा, गायत्री वर्मा, डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी, डॉ0 दिनेश सिंह सहित बड़ी संख्या में प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

मंथन

15 अगस्त 2021: श्रावण मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी, विक्रम संवत् 2078

'हर असफलता के पीछे सफलता आपकी राह देख रही है'

नौनिहालों के लिए टीकाकरण जरूरी

शिशुओं के जीवन के लिए टीकाकरण जरूरी है। नियमित टीकाकरण को छोड़ने से नवजात के जीवन को खतरा हो सकता है। शिशुओं के जीवन और भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए टीकाकरण सबसे प्रभावी और कम लागत का तरीका है। विश्व में आधे से अधिक बच्चे स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक टीका प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। यदि शिशु का टीकाकरण किया जाए तो विश्व स्तर पर लगभग 15 लाख शिशु मृत्यु को रोका जा सकता है। विगत दो दशकों में भारत ने स्वास्थ्य सूचकों, खास करके शिशु स्वास्थ्य से संबंधित सूचकों में सुधार करने के दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। भारत को सन 2014 में पोलियो मुक्त और सन 2015 में मातृत्व व नवजात टेटनस उन्मूलन का सर्टिफिकेट मिला। टीकाकरण परिवार और समुदाय को सुरक्षित रखने के लिए सुरक्षा कवच का काम करता है। अपने शिशुओं का टीकाकरण करके हम अपने समुदाय के सबसे अधिक जोखिम ग्रस्त सदस्य जैसे नवजात शिशु की सुरक्षा करते हैं। पूर्ण टीकाकरण को गति प्रदान करके वंचित लोगों तक पहुंच बनाने के लिए भारत सरकार ने एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम, मिशन इंद्रधनुष,प्रारंभ किया है। यह लाभार्थियों की संख्या, भौगोलिक पहुंच और टीकों की मात्रा के आधार पर विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण कार्यक्रम है, जिसमें प्रतिवर्ष लगभग 2 करोड़ 70 लाख नवजात शिशुओं को लक्षित किया जाता है। संपूर्ण टीकाकरण सुनिश्चित करने के लिए प्रति वर्ष भारत में 90 लाख से भी अधिक टीकाकरण सत्रों का आयोजन किया जाता है। इस प्रगति के बावजूद भी भारत में शिशु मृत्यु दर और अस्वस्थता में संक्रामक बीमारियों की उच्च भागीदारी है। भारत में लगभग 10लाख बच्चे अपने पांचवा जन्मदिन मनाने से पहले ही मर जाते हैं। इनमें से चार में से एक की मृत्यु निमोनिया और डायरिया के कारण होती है जो विश्व भर में शिशु मृत्यु की दो प्रमुख संक्रामक बीमारी है। इनमें से अधिकांश को शिशु स्तनपान टीकाकरण एवं उपचार देकर बचाया जा सकता है। जीवन के पहले वर्ष में भारत में केवल 65प्रतिशत शिशुओं को ही संपूर्ण टीकाकरण मिल पाता है। हालांकि,जीवन बचाने और बीमारियों से बचाव की टीकाकरण की क्षमता के स्पष्ट साक्ष्य मौजूद हैं। फिर भी,विश्व भर में लाखों शिशु टीकाकरण से वंचित रह जाते हैं जो उन्हें और समुदाय को बीमारियों एवं महामारी के खतरे में डाल सकता है। संपूर्ण टीकाकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने में कुछ नई चुनौतियाँ हैं जैसे कि कार्यकर्ताओं की सीमित क्षमता, माँग का सही आंकलन नहीं कर पाना, संसाधनों एवं कोल्ड चेन प्रबंधन जिसके कारण टीकों के नष्ट होने की दर अधिक है। भारत में टीके के माध्यम से रोके जाने वाले बीमारियों की ट्रैकिंग करने के प्रभावी तंत्र को विकसित करने की जरूरत है।

भारत की आजादी का अमृत महोत्सव

डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा

हम सभी भारतवासी आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए "आजादी का अमृत महोत्सव" मना रहे हैं। 15 अगस्त का दिन भारतीय लोकतंत्र और हर भारतीय के लिए काफी खास दिन है। यही वह दिन है जब भारत को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली थी। यह आजादी आसानी से नहीं मिली है, इसके लिए बड़ी कुर्बानी देनी पड़ी है और लंबा संघर्ष करना पड़ा है। महात्मा गांधी, भगत सिंह, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, पं0 जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉ0 भीमराव आम्बेडकर, डॉ0 राजेंद्र प्रसाद, मौलाना अबुल कलाम आजाद, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपत राय, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, चंद्रशेखर आजाद जैसे हजारों स्वतंत्रता सेनानियों ने बलिदान दिया।

महात्मा गांधी के अहिंसा के आंदोलन ने आजादी में बड़ी भूमिका निभायी है। आजादी की लड़ाई में हर धर्म, जाति, रंग और नस्ल के लोगों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। अरुणा आसफ अली, विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू, एनी बेसेंट जैसी महिलाओं ने भी आजादी के आंदोलन में हिस्सा लिया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम उन देशप्रेमियों को याद करते हैं, जिन्होंने अपनी समस्त सुख–सुविधाओं को त्याग कर अंग्रेजों के खिलाफ जंग इसलिए लड़ी जिससे सभी देशवासी एवं भावी पीढ़ी आजादी की सांस ले सके और सम्मान के साथ जी सके। असंख्य बलिदानियों की वजह से ही आज हम स्वतंत्र एवं लोकतांत्रिक भारत में गौरव के साथ जीवन यापन कर रहे हैं।

सभ्य समाज में प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता पूर्वक जीने का अधिकार है। विश्व के सभी प्राणी स्वतंत्रता की चाह रखते हैं। पिंजरे में बंद पक्षी भी अपनी आजादी के लिए

निरंतर पंख फड़फड़ाता रहता है। पिंजरा भले ही सोने का हो उसमें कोई रहना नहीं चाहता, हर कोई स्वतंत्रता के साथ मुक्त गगन में स्वच्छंद रहना चाहता है। महाकवि तुलसीदास के रामचरित मानस में उल्लेख है कि "पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं", अर्थात पराधीन व्यक्ति कभी भी सुख को अनुभव नहीं कर सकता है। सुख पराधीन और परावलंबी लोगों के लिए नहीं बना है। पराधीनता एक तरह का अभिशाप होता है। पराधीन व्यक्ति का हमेशा शोषण किया जाता है। पराधीनता की कहानी किसी भी देश, जाति या व्यक्ति की हो, वह दुःख की कहानी होती है। पराधीन व्यक्ति कभी भी अपने आत्म–सम्मान को सुरक्षित नहीं रख पाते हैं। जिस सुख को स्वतंत्र व्यक्ति अनुभव करता है उस सुख को पराधीन व्यक्ति कभी भी नहीं कर सकता। हितोपदेश में भी कहा गया है कि पराधीन व्यक्ति एक मृतक के समान होता है।

प्रत्येक राष्ट्र के लिए स्वाधीनता का बहुत महत्व होता है। कोई भी राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है जब वह स्वतंत्र हो। जो देश या जाति स्वाधीनता का मूल्य नहीं समझते हैं और पराधीनता को हटाने के लिए प्रयत्न नहीं करते वे एक दिन पराधीन जरुर हो जाते हैं और उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। स्वाधीनता को पाने के लिए कुर्बानी देनी पडती है। महान स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक ने कहा था "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।" किसी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्ज्वल होता है, जब वो अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से पल–पल जुड़ा रहता है।

भारत के पास गर्व करने के लिए समृद्ध ऐतिहासिक चेतना और सांस्कृतिक विरासत का अथाह भंडार है। हमें "आत्मनिर्भर भारत–शक्तिशाली भारत–स्वावलंबी भारत" के सपने को सच करते हुए अपनी कर्तव्य–परायण भावना का परिचय राष्ट्र के प्रति सम–र्पित होकर करना चाहिए, ताकि हम इतने शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर सकें, ताकि भविष्य में कोई भी विदेशी शक्ति भारत की ओर आंख उठाकर भी न देख सके। हमारे स्वतंत्रता सेनानानियों ने हमें जो आजादी दी है, उसे सुरक्षित रखना है तथा देश को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रखना है।

खेलों का महापर्व है ओलम्पिक

अभिषेक गुप्ता

विश्व में सर्वप्रथम ओलंपिक खेलों का विधिवत रूप से आयोजन 770 ई०पू० में यूनान के ओलंपिया नामक शहर में हुआ था। ओलंपिया शहर के कारण इस खेल का नाम ओलंपिक पड़ा। वर्तमान में हो रहे ओलंपिक खेलों को शुरू करने का श्रेय फ्रांस के विद्वान एवं खेल प्रेमी पियरे डी कूबर्टिन को जाता है। उनके अथक प्रयासों के चलते 1894 ई० में ष्अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति का गठन किया गया। 4 अप्रैल 1896 को एथेंस में वर्तमान ओलंपिक खेलों का प्रथम आयोजन शुरू हुआ और तभी से हर चार वर्षों के बाद विश्व के विभिन्न स्थानों पर इस खेल का आयोजन किया जाता है।

वर्ष 1914 में कूबर्टिन के सुझावों पर ओलंपिक ध्वज बनाया गया, जो सिल्क के सफेद कपड़े का बना होता है। आपस में जुड़े नीले, पीले, काले, हरे एवं लाल रंग के छल्लों में ओलंपिक चिन्ह मुद्रित होता है। ये पांच छल्ले क्रमशः पांच प्रमुख महाद्वीपों अफ्रीका, अमेरिका, एशिया, आस्ट्रेलिया तथा यूरोप को दर्शाते हैं। पूर्व में हुये ओलंपिक खेलों में महिलाओं को भाग नहीं लेने दिया जाता था, परंतु पेरिस के वर्ष 1900 में आयोजित ओलंपिक खेलों में पहली बार महिलाओं को भी इसमें शामिल करने का निर्णय लिया गया। 'सिटियस, अल्टीयस, फोर्टियस' लैटिन भाषा में ओलंपिक खेल का उद्देश्य है, जिसका हिंदी में अर्थ है– 'तेज, ऊँचा, बलवान'। इसे पहली बार 1920 के एंटवर्प (बेल्जियम) ओलंपिक खेलों में प्रस्तुत किया गया। ओलंपिक खेलों में किसी भी स्पर्धा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को एक प्रमाण पत्र के साथ क्रमशः स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक से सम्मानित किया जाता है। अधिकृत रूप से वर्ष 1920 में भारत ने ओलंपिक खेलों में भाग लेना शुरू किया था। 1916 में हुए प्रथम विश्वयुद्ध एवं 1940–44 में हुए द्वितीय विश्व युद्ध के क्रमशः छठे, बारहवें एवं तेरहवें ओलंपिक खेलों का आयोजन नहीं किया जा सका।

ओलंपिक खेलों में सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता के रूप में मान्यता प्राप्त है। कई खिलाड़ियों के लिए पुरस्कार जीते बिना इसमें भाग लेना गौरव की बात है। ओलंपिक खेल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली विविध खेलों की प्रतियोगिता है, जो देशों के बीच मित्रता, भाईचारे और अच्छे संबंधों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। टोक्यो ओलंपिक–2020 इसलिए भी खास है क्योंकि कोरोना वैश्विक महामारी के कारण ओलंपिक खेल को एक साल स्थगित कर इस वर्ष 2021 में इस खेल का आयोजन किया गया।

वैश्विक समस्या है दुनिया की बढ़ती आबादी

आरती तिवारी

11 जुलाई को हर वर्ष विश्व जन–संख्या दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने आधिकारिक तौर पर इस दिन को विश्व जनसंख्या दिवस के तौर पर नामित किया है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य दुनिया भर में मानव की जनसंख्या परिवर्तन का आकलन करना है।

मानव जनसंख्या ने पूरी दुनिया के तंत्र को गहराई से प्रभावित किया और संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव पैदा किया है। अति हर चीज की बुरी होती है। जिस तरीके से विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है तो वो दिन दूर नहीं जब गणित के आंकड़े कम पड़ जाएंगे। आशंका है कि धरती पर तो इतनी भूमि बचेगी नहीं कि इंसान रह सके।बेहिसाब बढ़ती जनसंख्या सभी समस्याओं का एक मूल कारण भी है फिर चाहे पृथ्वी का संतुलन बिगड़ना हो, ग्लोबल वार्मिंग हो, बढ़ती बेरोजगारी हो या संसाधनों का अभाव हो। दुनिया की बढ़ती आबादी एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। जिसके कारण ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या ने भी अपना मुंह उठाया है।

दुनिया की आबादी 767.35 करोड़ पहुंच गई है और यह लगातार बढ़ती ही जा रही है। इससे हमारे सामने गरीबी, बेरोजगारी,भोजन की कमी जैसी चुनौतियां खड़ी हो सकती है। सन् 1987 तक दुनिया की जन–संख्या 5 अरब को भी पार हो चुका था। अनियंत्रित बढ़ती जनसंख्या के घातक परिणाम से लोगों को उजागर करने के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के संचालक परिषद ने पहला कदम उठाया। वर्ष 1989 में परिषद ने 11 जुलाई को विश्व जनसं ख्या दिवस के रूप में घोषित किया। अगले वर्ष संयुक्त राष्ट्र ने इस दिन को हर वर्ष मनाने की घोषणा की। तब से हर वर्ष दुनियाभर के अलग–अलग देश इस दिन को मनाते आ रहे हैं।

दरअसल विश्व की जन–संख्या को 1 अरब तक पहुंचने में हजारों साल लगे थे। इसके बाद करीब 200 साल में ही ये 7 गुना तक बढ़ गई। इसके पीछे चिकित्सा विज्ञान में सुधार होना, मृत्यु दर में कमी आना और जन्म दर बढ़ना जैसे कई कारण हैं। आज दुनिया की आधी से ज्यादा आबादी एशियाई देशों में है। जनसंख्या के लिहाज से चीन और भारत पहले और दूसरे नंबर पर हैं। वर्ल्डोमीटर के मुताबिक भारत की आबादी 1.39 अरब है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में हर मिनट 25 बच्चे पैदा होते हैं। अगर इसी रफ्तार से हमारी आबादी बढ़ती रही तो आने वाले 10 साल में भारत दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी वाला देश होगा।

प्रायः लोग रोजगार के लिए सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन करते हैं। यह समस्या अकेले भारत की ही नहीं, ऐसे प्रदर्शन विश्व के कई देशों में हो रहे हैं। बेरोजगारों ने बेरोजगार संघ के नाम से संस्थाएं तक बना ली हैं। इन समस्याओं से बचने का एकमात्र उपाय है, बढ़ती जनसंख्या को किसी भी प्रकार से रोकना। हालांकि, जागरूकता अभियानों की वजह से जनसंख्या वृद्धि की दर को काफी हद तक नियंत्रित किया गया है। विश्व जनसंख्या दिवस मनाने की पहल से आज लोगों में इसके प्रति जागरूकता बढ़ी है।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति विश्वविद्यालय की गतिविधियों को सम्प्रेषित करती है। महात्मा बुद्ध,, हिन्दी मीडिया और भारतीय सिनेमा पर लेख ज्ञानवर्द्धक एवं रूचिकर लगे।

– शशांक पाठक

सुविचार

"स्वतंत्रता हमारा जन्म–सिद्ध अधिकार है।"

– लोकमान्य तिलक

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

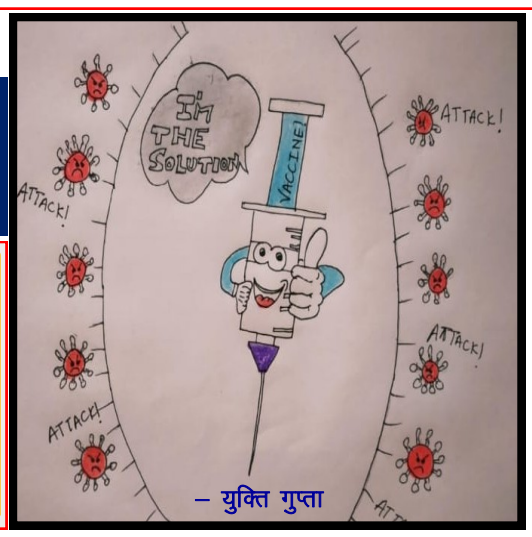

– युक्ति गुप्ता

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा

संकलन एवं सम्पादन
अभिषेक, सुरभि, ज्योति

Feedback
avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

कोविड प्रोटोकॉल एवं सीसीटीवी की निगरानी में मुख्य परीक्षा

22 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की मुख्य परीक्षा कोविड प्रोटोकॉल में शुरू हुई। विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित 383 केन्द्रों पर स्नातक एवं परास्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों ने दो पालियों में परीक्षा दी जिसमें 51 हजार 65 परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। इसमें 1 हजार 563 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे।

परीक्षा की शुचिता को बनाये रखने के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह की अगुवाई में अधिकारियों एवं पर्यवेक्षकों ने कई परीक्षा केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया। परीक्षा कोविड–19 प्रोटोकॉल में शुचिता के साथ होते हुए पाई गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने प्रथम पाली में जवाहर लाल नेहरू स्मारक पीजी कॉलेज, बाराबंकी एवं कृष्णावती रामनरेश कॉलेज, अयोध्या के परीक्षा केन्द्र का औचक निरीक्षण किया। कुलपति ने परीक्षा कक्ष में जाकर छात्रों से परीक्षा की जानकारी प्राप्त की। कोविड प्रोटोकॉल एवं सीसीटीवी की निगरानी में परीक्षा हो रही थी।

इसी के साथ कुलपति ने परीक्षा केन्द्रों को केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा परीक्षा के सम्बन्ध में जारी एडवाइजरी का कड़ाई के साथ पालन करने का निर्देश दिया। इसी क्रम में विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक उमानाथ ने अयोध्या के विभिन्न परीक्षा केन्द्रों का सघन निरीक्षण किया। जिसमें प्रथम पाली में झुनझुनवाला महाविद्यालय, गुरूनानक कॉलेज, आई0ई0टी0 एवं द्वितीय पाली में परमहंस डिग्री कॉलेज, साकेत महाविद्यालय एवं जयगणेश महाविद्यालय के परीक्षा केन्द्रों का जायजा लिया। परीक्षा शांतिपूर्ण एवं शुचिता के साथ कोविड–19 के दिए गये निर्देशों के अधीन पाई गई।

एनसीसी द्वारा परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया गया

11 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में एन0सी0सी0 ग्रुप हेडक्वॉर्टर प्रयागराज के निर्देश क्रम में 65 यूपी बटालियन एनसीसी, अयोध्या ने परिसर में स्वच्छता अभियान चलाकर साफ–सफाई की। इसी क्रम में एन0सी0सी0 कैडेट्स द्वारा विश्वविद्यालय परिसर स्थित महात्मा गांधी, सरदार पटेल, विवेकानंद, डॉ0 राममनोहर लोहिया तथा मां सरस्वती की प्रतिमाओं की साफ–सफाई कर माल्यार्पण किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने सरदार पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए एन0सी0सी0 कैडेट्स से कहा कि स्वच्छता को जीवन में उतारे क्योंकि साफ–सफाई को जीवन में अपनाने से कई गंभीर बीमारियों से बचा जा सकता है। इसी क्रम में कुलसचिव उमानाथ ने महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर स्वच्छता के प्रति प्रेरित किया। इस अवसर पर प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा, राजीव कुमार, ज्ञान, सीनियर कैडेट्स में रविन्द्र मिश्रा, निधि सिंह, अविचल, शिवानी पांडेय, रुपाली सिंह, बटालियन से सूबेदार शांति भूषण, सी0एच0एम0 बल बहादुर थापा, हवलदार जयराम व विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारी एवं शिक्षकगण उपस्थित रहे।

देश के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन कर्तव्यनिष्ठा से करें: कुलपति

13 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में ''आजादी का अमृत महोत्सव'' कार्यक्रम के अंतर्गत परिसर में फिट इंडिया फ्रीडम रन अभियान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने अभियान का नेतृत्व करते हुए परिसर के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं के साथ दौड़ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। कुलपति प्रो0 सिंह ने सर्वप्रथम सभी को आजादी के 75वें वर्ष पर आजादी का अमृत महोत्सव'' कार्यक्रम के अंतर्गत फिट इंडिया फ्रीडम रन अभियान में आये सभी लोगों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि फिट इंडिया फ्रीडम रन का उद्देश्य यह है कि हम सभी अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दें। हम स्वस्थ रहेंगे तो समाज स्वस्थ रहेगा। इससे देश समृद्धि की ओर बढ़ेगा। कुलपति ने कहा कि हम सभी अपने कर्तव्यों से भली–भांति परिचित है। किन्तु उनका पालन पूरी तरीकें से नही करते है। इस अवसर पर हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि देश के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन कर्तव्यनिष्ठा से करेंगे।

शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योगिक विज्ञान संस्थान के समन्वयक प्रो0 एस0एस0 मिश्र ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। आयोजन सचिव डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा ने दौड़ में प्रतिभाग करने वाले विश्वविद्यालय परिवार के विद्यार्थियों, अधिकारियों, कर्मचारियों और शिक्षक गणों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। इसमें मुख्य रूप से विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो० अजय प्रताप सिंह, कुलसचिव उमानाथ, प्रो० नीलम पाठक, प्रो० चयन कुमार मिश्र, प्रो० शैलेंद्र कुमार वर्मा, प्रो0 अनूप कुमार, प्रो0 आर के सिंह, प्रो० रमापति मिश्र, डॉ0 अनिल मिश्रा, डॉ0 शैलेंद्र सिंह, डॉ0 कपिल सिंह राना, डॉ0 अर्जुन सिंह, डॉ0 त्रिलोकी यादव, डॉ0 अनुराग पांडे, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, परितोष त्रिपाठी, डॉ0 आशीष पटेल, अनुराग सोनी, आलोक तिवारी, गायत्री वर्मा, डॉ0 राजेश सिंह, डॉ0 वीरेंद्र वर्मा, रामजी सिंह, डॉ0 अनिल शर्मा, विवेक सिंह, देवेंद्र वर्मा, आशीष जायसवाल, मोहनी पांडे, स्वाति उपाध्याय, आनंद मौर्य, और कई विभागों के छात्र–छात्राएं, शिक्षक और कर्मचारी उपस्थित रहे।

जीवनदायी आक्सीजन का एक मात्र स्रोत वृक्ष हैं: कुलपति

01 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के नवीन परिसर में वृक्षारोपण जन आंदोलन–2021 के तहत सघन वृक्षा–रोपण अभियान का शुभारम्भ किया गया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने परिसर में पीपल का वृक्ष लगाकर अभियान का शुभारम्भ किया। मौके पर वित्त अधिकारी धनजंय सिंह, कुलसचिव उमानाथ तथा डीन ऑफ साइंस एंड आई0ई0टी0 के प्रो0 चयन कुमार मिश्र ने भी अभियान में शामिल रहे। कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बताया कि पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए परिसर में सघन वृक्षारोपण किया जा रहा है।

उन्होंने अपील की कि सभी नागरिकों को इस अभियान का हिस्सा बनना चाहिए। इससे पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलेगी।

कुलपति ने बताया कि कोविड की दूसरी लहर से जनमानस को आक्सीजन के महत्व का एहसास हुआ है। जीवनदायी आक्सीजन का एक मात्र श्रोत वृक्ष है। वृक्षों की उपेक्षा से जनजीवन संकट ग्रस्त हो जायेगा। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में 7 जुलाई, 2021 तक 01 लाख वृक्ष लगाने का लक्ष्य है। विश्वविद्यालय परिसर में प्रत्येक विभाग को 11 वृक्ष रोपित करने का निर्देश दिया गया है।

विश्वविद्यालय के बागवानी एवं स्वच्छता सहयोग सेवा प्रभारी डॉ0 विनोद चौधरी ने बताया कि एक सप्ताह तक विश्वविद्यालय के परिसर एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में वृक्षारोपण जनआंदोलन का शुभारम्भ किया गया। इसमें 7 जुलाई तक एक लाख वृक्षों को रोपित करने का लक्ष्य रखा गया है। इस अभियान के पहले दिन 101 पीपल के वृक्ष रोपित किए गए है। वृक्षारोपण अभियान में प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 रमापति मिश्र, डॉ0 सुधीर श्रीवास्तव, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, कुलपति ओएसडी डॉ0 शैलेन्द्र सिंह, अखिलेश मौर्य, पारितोष त्रिपाठी, जैनेन्द्र सिंह, अनुराग सिंह, नवीन पटेल, रमेश मिश्र सहित अन्य शामिल रहे।

जनसंख्या नियंत्रण के लिए हर नागरिक को आगे आना होगा: कुलपति

11 जुलाई । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र, स्वास्थ्य विभाग तथा एक्टिविटी क्लब द्वारा महिला विस्तार गतिविधि के अंतर्गत ग्राम पंचायत माधवपुर मसौधा में विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर जनसंख्या नियंत्रण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कोविड प्रोटोकॉल में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि आज देश की जनसंख्या तेजी के साथ बढ़ रही है। इस पर प्रभावी नियंत्रण पाने के लिए हर नागरिक को आगे आना होगा। गरीबी, निरक्षरता, परिवार नियोजन जैसे कार्यक्रमों का अनुपालन न करना, संसाधनो की कमी, कम मृत्यु दर एवं उच्च जन्म दर, वयस्क शिक्षा की कमी एवं लड़के की चाहत जैसी वजहों से भारत की आबादी तेजी से बढ़ती जा रही है। कुलपति ने कहा कि हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करें। छोटा परिवार होने के कई फायदे हैं, बच्चों को अच्छी परवरिश मिलती है। बच्चे और मां का स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहता है जिससे दवाइयों का अतिरिक्त खर्च बचता है। कुलपति ने नागरिकों से कहा कि जागरुक बनिए और छोटा परिवार, अच्छा परिवार को चुनिए।

अध्ययन केंद्र की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने बताया कि तेजी से बढ़ती जनसंख्या एक समस्या है। इसको नियंत्रित करने के लिए लंबे समय से प्रयास जारी हैं, लेकिन इसके बावजूद जनसंख्या में वृद्धि लगातार बढ़ती जा रही है जो विकासशील देशों के लिए चिंता का विषय है।

इसी क्रम में स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डॉ0 दीपशिखा चौधरी ने कहा कि पूरी दुनिया को जनसंख्या नियत्रंण के लिए परिचित कराना जरूरी है। इसी क्रम में डायरेक्टर एक्टिविटी क्लब डॉ मुकेश कुमार वर्मा ने कहा कि शिक्षा का अभाव जनसंख्या वृद्धि की एक बड़ी वजह है। जनसंख्या वृद्धि देश के विकास में बाधक है।

इस अवसर पर डॉ0 शैलेंद्र सिंह, मसौधा ग्राम प्रधान श्री ऋषिकेश वर्मा, डॉ0 महिमा चौरसिया, अमित वर्मा, विशाल गुप्ता, पंकज गुप्ता, विपिन वर्मा, अमरनाथ पांडे, पदमा देवी, सुनील यादव, विपुल शर्मा, सोमनाथ, मीरा, गीता, विपिन, महेंद्र, राकेश, सनी, आनंद शैलेंद्र तथा छात्र–छात्राओं की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

नई शिक्षा नीति हमें भारतीयता की ओर ले जाती है: प्रो0 वाजपेयी

10 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के टीचर्स ट्रेनिंग सेल एवं इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल द्वारा "एनईपी–2020: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का नया युग" विषय पर 09–10 अगस्त, 2021 को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का समापन किया गया।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर के स्कूल ऑफ फिजिकल साइंसेज के संकायाध्यक्ष प्रो0 पी0के0 वाजपेयी ने कहा कि भारत की नई शिक्षा नीति को शैक्षणिक क्रांति के रूप में देखा जा रहा है। यह शिक्षा नीति हमें भारतीयता की ओर ले जाती है। यह 21वीं सदी की चुनौतियों से लड़ने की क्षमता प्रदान करने वाली और विश्वभर को नई दिशा देती है। प्रो0 वाजपेयी ने कहा कि नई शिक्षा नीति सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति जैसी दिखती है। निश्चित ही यह शिक्षा नीति राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देगी। उन्होंने कहा कि भारत में धर्म, ज्ञान और संस्कृति का त्रिपुण्ड है जो हमें आगे ले जाने में सक्षम है। भारत में संस्कृति और शिक्षा को अलग नहीं देख सकते हैं। धर्म से संचालित शिक्षा मानव में ऐसे गुणों का विकास करती है, जो विश्व को कुटुंब के रूप में माने। वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि 21वीं सदी शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी युग के नाम से जानी जायेगी। इसने कई कार्यों को आसान कर दिया है। इसके प्रभाव को शिक्षा के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में देखा जा सकता है। कुलपति ने कहा कि वर्तमान में तकनीक ने शिक्षा के क्षेत्र को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। खासकर उच्च शिक्षण संस्थानों में तकनीक के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसका व्यापक उपयोग किया जा रहा है। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि शिक्षा में तकनीक के उपयोग से भाषाओं की बाधा को दूर करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान महामारी की वजह से वर्चुअल शिक्षा को बढ़ावा मिला है। इससे छात्रों एवं शिक्षकों को पारंपरिक शिक्षण और शिक्षण तकनीकों के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया है। ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए शिक्षा के दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में एक आवश्यक उपकरण है।

विश्वविद्यालय एनईपी टास्क फोर्स के अतिरिक्त संयोजक प्रो0 एस0एस0 मिश्र ने कहा कि नई शिक्षा नीति में गुणवत्ता पर जोर दिया गया है। आईक्यूएसी की निदेशक प्रो0 नीलम पाठक ने अतिथियों का स्वागत करते हुए दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार की रिर्पोटियर प्रस्तुत की। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की वंदना एवं कुलगीत की प्रस्तुति के साथ किया गया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधिकारी चयन कुमार मिश्र, एनईनी के संयोजक प्रो0 एस0एन0 शुक्ल, प्रो0 आर0के तिवारी, प्रो0 एसके रायजादा, प्रो0 के0के वर्मा, प्रो0 गंगाराम मिश्र, डॉ0 नीलम यादव, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 अनिल मिश्र, डॉ0 प्रत्याशा मिश्रा, डॉ0 त्रिलोकी यादव, डॉ0 अर्जुन सिंह, डॉ0 अनुराग पाण्डेय, विनीत सिंह, शिक्षा जैन, आलोक तिवारी, गायत्री वर्मा, डॉ0 निमिष मिश्र सहित बड़ी संख्या में महाविद्यालय के शिक्षक एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

- अवध विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा 29 जून 2021 को 'राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस' का वर्चुअल आयोजन किया गया।
- अवध विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग के प्रो0 एस0एस0 मिश्र ने 26 जुलाई 2021 को विभागाध्यक्ष पद का कार्यभार ग्रहण किया।
- अवध विश्वविद्यालय के विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो0 चयन कुमार मिश्र को 31 जुलाई 2021 को विश्वविद्यालय का वित्त अधिकारी बनाया।
- अवध विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र एवं एक्टिविटी क्लब द्वारा अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस के अवसर पर 01 अगस्त 2021 को महिलाओं के विरुद्ध समाज में व्याप्त कुरीतियों से निपटने के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- आई0ई0टी0 में 'यूज ऑफ टेक्नोलॉजी इन एजुकेशन' विषय पर 03 अगस्त 2021 को वेबिनार का आयोजन किया गया।

परिसर के पाठ्यक्रमों एवं संकायों का किया गया पुनर्गठन

06 अगस्त । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय परिसर में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों एवं संकायों को उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय की कुलाधिपति श्रीमती आनन्दीबेन पटेल ने विश्वविद्यालय परिनियमावली में शामिल करने की सहज स्वीकृति प्रदान की है।

राज्यपाल ने विश्वविद्यालय की पूर्व में हुई कार्यपरिषद की बैठक के अनुमोदन पर इस शर्त के साथ अनुमति प्रदान की है कि विश्वविद्यालय द्वारा उ0प्र0 राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973 की धारा–52 में विहित शर्तों का अनुपालन कर पाठ्यक्रमों को स्ववित्तपोषित योजनान्तर्गत संचालित किया जाएगा।

प्रदेश की राज्यपाल द्वारा कुल 32 पाठ्यक्रमों एवं संकायों के पुनर्गठन को विश्वविद्यालय के परिनियमावली में सम्मिलित करने की अनुमति दी गई है। जिसमें कला संकाय को अब कला एवं मानविकी एवं वाणिज्य संकाय की जगह वाणिज्य एवं प्रबंध संकाय जाना जाएगा। इसके अतिरिक्त परिसर के स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा के कई पाठ्यक्रमों को विश्वविद्यालय की परिनियमावली में शामिल करने की अनुमति कुलाधिपति द्वारा प्रदान की गई है जिसमें पालि एवं बुद्धिस्ट स्टडीज, फिलॉसफी एण्ड रिलीजन, इण्टरनेशनल रिलेशन, स्ट्रेटेजिक स्टडीज, भोजपुरी एवं अवधी भाषा, जर्मन, फ्रेन्च एवं रसियन भाषा, कोरियन, जैपनीज एवं चाइनीज भाषा, वूमन स्टडीज, पापुलेशन स्टडीज, डिजास्टर मैनेज– मेन्ट, फूड टेक्नोलॉजी, आर्किटेक्चर इंजीनियरिंग, केमिकल इंजीनियरिंग, बॉयोमेडिकल इंजीनियरिंग, मास्टर ऑफ पब्लिक हेल्थ, ह्यूमन कसेन्सेज, योगिक साइंस एण्ड थिरेपी, योगा एण्ड आल्टरनेटिव थिरेपी–कला एवं मानविकी संकाय, बी०पी० ई०एस०, जियोफिजिक्स, जियोलॉजी, एरोमा टेक्नोलॉजी, रिमोट सेन्सिंग एण्ड जियोग्राफिकल इन्फार्मेशन सिस्टम, कम्प्यूटर एप्लीकेशन, बी०वॉक–होटल मैनेज–मेन्ट, ट्रैवेल एण्ड टूरिज्म, हेल्थ एण्ड फिटनेस मैनेजमेन्ट, फाइन आर्ट्स, परफॉर्मिंग आर्ट्स, बी०वॉक टूरिज्म एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड हॉस्पिटैलिटी, आई०टी०ई०पी०, शिक्षा संकाय के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत बी०वॉक फैशन डिजाइनिंग गारमेन्टस टेक्नोलॉजी एवं डिप्लोमा इन स्ट्रेन्थ एण्ड कंडीशनिंग विषय शामिल है।

नए सत्र से राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति लागू

25 जून। अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह की अध्यक्षता में कार्यपरिषद की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में सत्र 2021–22 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के तहत समान पाठ्यक्रम लागू करने की मुहर लगी। इसके साथ ही एन0ई0पी0 के क्रम में पूर्व में गठित समिति द्वारा निर्मित प्रवेश गाइडलाइन का अनुमोदन किया गया। बैठक में नई शिक्षा नीति–2020 के तहत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध दो संघटक महाविद्यालय राजकीय महाविद्यालय कटरा चुग्घुपुर, सुल्तानपुर तथा राजकीय महाविद्यालय भवानीपुर कला इटियाथोक, गोण्डा में कला संकाय के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर बी0ए0 पाठयक्रम में प्रवेश लेने का रास्ता साफ हो गया।

बैठक में परीक्षा समिति द्वारा पिछली बैठक में लिए गए निर्णय से कार्यपरिषद को संसूचित किया गया एवं कार्यवृत्त का अनुमोदन किया गया। बैठक में सत्र 2021–22 से संचालित डिप्लोमा इन स्ट्रेंथ एण्ड कंडीशनिंग पाठ्यक्रम को स्ववित्त–पोषित योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय की परिनियमावली में शामिल किए जाने का निर्णय परिषद के सदस्यों द्वारा लिया गया। बैठक में राजभवन उत्तर प्रदेश के निर्देशानुसार आवासीय परिसर में महिला अध्ययन केन्द्र की स्थापना के सम्बन्ध में परिषद को संसूचित किया गया।

महिलाओं की उन्नति से ही देश के विकास का निर्धारण होता हैः कुलपति

01 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र, स्वास्थ्य विभाग तथा एक्टिविटी क्लब द्वारा महिला विस्तार गतिविधि के अंतर्गत मसौधा के ग्राम पंचायत माधवपुर में राष्ट्रीय चिकित्सा दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य जागरूकता अभियान का शुभारम्भ कोविड प्रोटोकॉल में किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि किसी भी देश के विकास का निर्धारण महिलाओं की उन्नति से ही होता है। महिलाएं अपने जीवन में कई भूमिकाओं के रूप में होती हैं, जननी अर्थात मां की भूमिका सर्वश्रेष्ठ है। कुलपति ने कहा कि महिलाएं अपने बच्चों के जीवन में आदर्श मूल्यों के लिए तभी सक्षम होगी जब वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होंगी। कुलपति प्रो0 रविशंकर ने कहा कि आज महिलाएं घरेलू कार्यों एवं जिम्मेदारियों की वजह से अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पाती हैं, इसी कारण उनका शरीर कमजोर पड़ जाता है और कई बीमारियों से घिर जाता है। महिलाओं को अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कुलपति ने कहा कि कोविड–19 महामारी ने संपूर्ण विश्व में एक विकराल रूप ले लिया है, ऐसे में सभी को संतुलित जीवन शैली अपनानी होगी। पौष्टिक आहार, फाइबर युक्त भोजन, समुचित प्रोटीन व हरी सब्जियों का सेवन करना जरूरी है। कुलपति ने प्रदेश की राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल द्वारा माताओं, बहनों व बच्चों के उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण के सर्वांगीण विकास के लिए निर्देशित उचित कदम उठाने की आवश्यकता बताई। इसी क्रम में विश्वविद्यालय समीपवर्ती क्षेत्रों में स्वास्थ्य जनजागरूकता कार्यक्रम के लिए निरंतर प्रयत्नशील है।

विश्वविद्यालय महिला अध्ययन केंद्र की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने महिला विस्तार गतिविधि के उद्देश्य के बारे में ग्रामीण महिलाओं को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि कुलपति प्रो0 सिंह के मार्गदर्शन में महिला अध्ययन केंद्र, बालिकाओं और महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वाभिमान तथा आर्थिक स्वावलंबन की ओर प्रेरित करने में सार्थक पहल कर रही है। आज का कार्यक्रम महिलाओं को स्वास्थ्य, परिवार एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने पर आधारित है। विश्वविद्यालय की तरफ से महिलाओं को स्वास्थ्य संरक्षण के लिए पुष्टाहार वितरित कराया जा रहा है। इसके साथ ही स्वास्थ्य स्पर्धा तथा पुष्टाहार स्पर्धा का आयोजन किया गया।

परिसर की स्वास्थ्य चिकित्साधिकारी डॉ0 दीपशिखा चौधरी ने सुरक्षित मातृत्व, गर्भ संस्कार, कुपोषण, महिलाओं में रक्त की कमी, ब्रेस्ट कैंसर, सर्वाइकल कैंसर, क्षय रोग तथा उनके निवारण के बारे में महिलाओं को विस्तारपूर्वक समझाया। उन्होंने बताया कि पौष्टिक भोजन स्वास्थ्य की एक महत्त्वपूर्ण आधारशिला है। इसलिए शरीर की जरूरतों को पूरा करने के लिए भोजन में उचित मात्रा में पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि ऊर्जा–पोषण असंतुलन के परिणामस्वरूप शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास, मृत्युदर पर दुष्प्रभाव पड़ने के साथ–साथ मानव क्षमता पर भी असर पड़ता है। यह सामाजिक, आर्थिक विकास को भी प्रभावित कर सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार लाखों लोग अत्यधिक या असंतुलित आहार के कारण गैर–संचारी रोगों से पीड़ित हो जाते हैं और उन्हें इलाज पर भारी खर्च का भी सामना करना पड़ता है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने कहा कि महिलाओं तथा बच्चों का स्वस्थ रहना बहुत जरूरी है। एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। इसी क्रम में एक्टिविटी क्लब के डायरेक्टर डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा ने कहा कि स्वस्थ रहने में शारीरिक गतिविधियां बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चे, महिलाएं तथा किशोरिया शारीरिक गतिविधियों में भाग लेती हैं तो वह शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ रहेंगी। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ0 शैलेंद्र सिंह, मसौधा ग्राम प्रधान ऋषिकेश वर्मा, डॉ0 महिमा चौरसिया, निधि अस्थाना, नीलम मिश्रा, वल्लभी तिवारी, देवेंद्र वर्मा, संघर्ष सिंह, अनुराग सोनी, डॉ0 दिनेश सिंह, डॉ0 दिपाश दुबे, अमित, अमरनाथ, पदमा देवी, सुनील, विपुल, राकेश, सनी शर्मा, आनंद, शैलेंद्र एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

खिलाड़ी लक्ष्य बड़ा रखेंगे तो सफलता निश्चित है : सुजीत कुमार

07 जुलाई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में अंतर्विभागीय वार्षिक खेल प्रतियोगिता 2020–21 के सम्मान एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन कोविड प्रोटोकॉल में स्वामी विवेकानंद प्रेक्षागृह में किया गया। सम्मान समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि खिलाड़ियों को खेल भावना के साथ खेलना चाहिए। खिलाड़ियों की असफलता में सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है। इसलिए सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर अभ्यास करते रहें। कुलपति ने खिलाड़ियों से कहा कि देश के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए। जिन्होंने देश के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है, खिलाड़ियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ओलंपियन एवं अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी सुजीत कुमार ने कहा कि खिलाड़ी को सदैव कठिन परिश्रम करना चाहिए। इससे खिलाड़ियों के मस्तिष्क का विकास होगा। खेल में प्रतिभाग करते समय खिलाड़ियों को अपने दिमाग का सही उपयोग करना चाहिए। यदि खिलाड़ी लक्ष्य बड़ा रखेंगे तो सफलता निश्चित है। उन्होंने कहा कि खिलाड़ी को स्नातक होना जरूरी है और शिक्षकों का हमेशा सम्मान करना चाहिए। उनकी फटकार छात्रों के व्यक्तिगत विकास में सहायक होती है। उन्होंने कहा कि छात्रों को अपना कॅरियर बनाने के लिए पूरी छूट मिलनी चाहिए, जिस क्षेत्र में रूचि हो उसमें मन लगाकर कार्य करें।

समारोह में क्रीड़ा परिषद के अध्यक्ष प्रो0 जसवंत सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का क्रीड़ा परिषद खिलाड़ियों के कौशल विकास के लिए लगातार मेहनत कर रहा है। पिछले वर्ष कोविड प्रोटोकॉल में खेल प्रतियोगिताएं कराई गई। जिसमें विशेषकर अयोध्या हॉफ मैराथन रहा है। विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर की प्रतियोगिता में अपना परचम लहराया है। उन्होंने खिलाड़ियों से कहा कि खेल में अच्छे से अच्छा प्रदर्शन करते रहना चाहिए।

समारोह में कुलपति एवं कुलसचिव ब्रिगेड के बीच खेले गये विशेष प्रतिस्पर्धाओं के विजेता एवं उप. विजेता तथा अंतर्विभागीय खेल प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह, मुख्य अतिथि ओलंपियन तथा अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी सुजीत कुमार, वित्त अधि–कारी धनंजय सिंह एवं कुलसचिव उमा –नाथ ने स्मृति चिन्ह एवं ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। अंतर्विभागीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में मुख्य अतिथि रहे प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 आरके तिवारी, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह, प्रो0 फारुख जमाल, हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 अनूप कुमार, प्रो0 गंगाराम मिश्र, प्रो0 राजीव गौण, प्रो0 आर के सिंह, प्रो0 तुहिना वर्मा, प्रो0 शैलेंद्र वर्मा, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 अनिल कुमार मिश्र, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा एवं डॉ0 दीपशिक्षा को कुलपति एवं मुख्य अतिथि ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन एवं कुलगीत की प्रस्तुति के साथ किया गया। धन्य– वाद ज्ञापन विश्वविद्यालय के क्रीड़ा प्रभारी डॉ0 मुकेश वर्मा ने किया। संचालन डॉ0 निखिल उपाध्याय ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

रिसर्च के क्षेत्र में बायोइनफॉर्मेटिक्स उपयोगीः कुलपति

02 जुलाई। अवध विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग में "माइक्रोबायोलॉजी साइंस में बायोइनफॉर्मेटिक्स के अनुप्रयोग" विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि रिसर्च के क्षेत्र में बायोइनफॉर्मेटिक्स बहुत ही उपयोगी है। आने वाला समय अंतर्विषयक अनुसंधान का होगा। मॉलिकुलर बायोलॉजी के क्षेत्र में बायोलॉजिकल डाटा के प्रबंधन एवं विश्लेषण के लिए कम्प्यूटर तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। कुलपति ने कहा कि बायोलॉजिकल आंकड़ों में छिपे हुए जैविक सूचनाओं को बायोइनफॉर्मेटिक्स के माध्यम से ही बाहर लाया जा सकता है। इससे मानव जीवन का स्तर ऊपर उठाया जा सकता है।

वेबिनार में अंतरराष्ट्रीय मुख्य वक्ता अमेरिका के टेनेसी के संत जूड चिल्ड्रंस रिसर्च हॉस्पिटल के वैज्ञानिक डॉ0 संदीप ढांडा ने 'कोरोनावायरस पैनडेमिकः रेस्क्यूइंग रोल ऑफ बायोइनफॉर्मेटिक्स' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि दुनिया भर के विभिन्न संस्थाओं के डेटाबेस में कोरोनावायरस से संबंधित जानकारियां उपलब्ध हैं। इन डेटाबेस पर रिसर्च करके कोरोनावायरस के संपूर्ण इतिहास की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। विशिष्ट अतिथि साउथ अफ्रीका के प्रिटोरिया विश्वविद्यालय के पूर्व वैज्ञानिक डॉ0 सुरेंद्र विक्रम ने 'एनवायरमेंटल मैसेजेस यूजिंग द डीएनए सीक्वेंस' विषय पर प्रतिभागियों को विस्तृत जानकारी दी। डॉ0 विक्रम ने बताया कि उन्होंने स्वयं बायोइनफॉर्मेटिक्स का प्रयोग करके दक्षिणी हिंद महासागर में पाए जाने वाले विभिन्न सूक्ष्मजीवों पर अध्ययन किया है। कार्यक्रम के संयोजक एवं माइक्रोबायोलॉजी के विभागाध्यक्ष प्रो0 शैलेंद्र कुमार ने अतिथियों का स्वागत करते हुए वेबिनार की रूपरेखा प्रस्तुत की। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 मणिकांत त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ0 नीलम यादव, डॉ0 रंजन सिंह, डॉ0 महेंद्र पाल सहित बड़ी संख्या में अन्य ऑनलाइन जुड़े रहे।